मानव को महामानव बनाने का यंत्र

'ध्यान'

प्रकृति में सिर्फ मानव ही एक ऐसा चुम्बक है जो जैसा तत्व चाहे उसको खींच सकता है।

मानव समाज में धर्म कई हैं, सभी धर्म अपने ढंग से जीने का दर्शन देते हैं। मानव समाज अपने धर्म के दर्शन को गाता है पर अपने जीवन में करता नहीं है, जो जिधर चाहे उधर झुका दे। धर्म तो प्रकृति की वह व्यवस्था है जो चल रही है जिसमें मानव समाज पूर्ण है। यदि मानव समाज यह सोचता है कि जीव रूप में उससे भी अधिक शक्तिशाली कोई है तो यह उसका भ्रम होगा। प्रकृति में तो मानव समाज ही पूर्ण है जो प्रकृति की सबसे अधिक जानकारी प्राप्त करके उसका उपयोग करता है। इससे अधिक यदि कुछ है तो प्रकृति है जो एक जगह से स्वतः व्यवस्था बनाती है जो सबके लिए समान होती है। कोई भी व्यक्ति इस प्रकृति को पहचानकर इसे गुण के आधार पर बराबर प्राप्त करने का अधिकार रखता है। मात्र प्रकृति का धर्म ही ऐसा है, जो भाग्य पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इसका परिणाम अवश्य है, यही सत्य धर्म है। मानव समाज की लड़ाई व्यवस्था की लड़ाई है, धर्म की लड़ाई नहीं। धर्म तो प्रकृति का नियम है जिसे स्वयं करके प्राप्त किया जा सकता है। प्रकृति के अंदर जो भी चुम्बक है उसका एक मूल गुण है जैसे सत्यदेव सिर्फ सत्य को अपने पास खींचता है। लोहे का चुम्बक सिर्फ लोहे को अपने पास खींचेगा।

इसके लिए वह प्रकृति के धर्म को पहचानकर उसके अनुसार शरीर बना ले तो वह प्रकृति में विचरण कर रहे उस गुण को अपने अंदर खींचता है। मानव समाज जो देख रहा है वह उसकी समस्या नहीं है, बल्कि जो नहीं दिखाई दे रहा है वह वास्तविक समस्या है। इसी सत्य प्रकृति को जानने का एकमात्र साधन है– ध्यान। मानव समाज ने धर्म को बांट लिया है पर सभी को सत्य प्रकृति की जानकारी ध्यान मात्र से होती है, किसी अन्य साधन से नहीं। यह ध्यान सिर्फ कुछ लोगों के लिए नहीं है। यह सभी के लिए आवश्यक है। ध्यान से प्रकृति को जाना जा सकता है। इसके लिए प्रकृति से बिना किसी माध्यम के संबंध स्थापित किया जा सकता है।

ध्यान मानव की वह क्रिया है जो प्रकृति में विचरण कराता है। जब व्यक्ति किसी वस्तु को खुली आँख अथवा बंद आँख से विचार शून्य होकर देखता है तो वह ध्यान में हो जाता है। ध्यान की दो अवस्था होती है– पहली आंख बंद करके किसी को देखना। इसमें विचार नहीं उठना चाहिए। दूसरी अपलक किसी को विचार शून्य होकर देखते रहना, जिसे त्राटक ध्यान कहते हैं। जिसकी आंख सही न हो उसे त्राटक ध्यान नहीं करना चाहिए।

मन जो कभी रुकता नहीं है, जब ध्यान में विचार को रोक दिया जाता है तो यह मन प्रकृति में विचरण करता है। जिसको व्यक्ति देखता रहता है उसी को लगातार देखते रहने से आपकी आंखों के सामने कई चीजें दिखाई देंगी जो विचारों से प्रभावित होती हैं। ऐसा करने से आपका अभ्यास धीरे– धीरे बन जाएगा। तो आप किसी चीज को ध्यान में लाकर उसकी हर बात को जान सकते हैं। जब व्यक्ति कोई क्रिया कर देता है तो उसका परिणाम प्रकृति में निकल जाता है, जो कभी नष्ट नहीं होता है। ध्यान में जब व्यक्ति किसी